J. J. C. CENTRAL BOARD
INWARD NO.:- 5910
CHAIRMAN:-
SEC. GENERAL:-
SECRETARY:
DATE:- 7-3-2017

साधर्मिक भक्ति !

महापुरुषों की वाणी से !

साधर्मिक भक्ति सर्वश्रेष्ठ दान की गिनती में आता है, वैसे सुपात्र दान का विशेष महत्व है, अभय दान की भी अपनी एक जगह है, किन्तु पुण्य प्राप्ति के लिये, एवं कर्म निर्जरा के लिये, साधर्मिक भक्ति का विशेष स्थान है | साधर्मिक भक्ति से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है, साधर्मिक भक्ति मन के उत्कृष्ठ भाव से करने पर, एवं अहोभाव लाने से, विशेष पुण्य का बन्ध होता है | और यह पुण्य आगे चल कर हमें धर्म आराधना में सहयोगी बनता है |

साधर्मिक भक्ति का जैन धर्म में विशेष महत्व है, विशेष कर जो व्यक्ति सन्त दर्शन हेतु, या धार्मिक बड़े महोत्सव में सम्मिलित होने हेतु घर से निकलता है, तब पहला पाँव उठाते ही, वह पुण्य का बन्ध करना चालू कर देता है | अहो भाव से सन्त दर्शन कर, धर्म आराधना कर, महोत्सव में सहयोगी बन कर, अपने कर्म निर्जरा की और बढ़ जाता है | ऐसे उत्कृष्ठ भाव वाले व्यक्ति को, भोजन कराने से उसकी आत्मा शान्त होती है, मन तृप्त होता है | ऐसे गुणी व्यक्ति को आहार दान देकर, व्यक्ति कर्म निर्जरा करते हुये, पुण्य का बन्ध भी कर लेता है |

जैन धर्म में तीर्थ यात्रा, सन्त दर्शन यात्रा, का विशेष महत्व है | गुरु दर्शन हेतु पधारे व्यक्तिओ का मन गुरु भगवन्तो के दर्शन से प्रफुल्लित होता है, एवं प्रवचन आदि सुनकर वह ध्यानस्थ हो जाता है, ऐसे व्यक्ति को भोजन कराने से, विशेष पुण्योपार्जन होता है, भगवान महावीर ने एक शब्द दिया था - **"कड़े माणे कड़े"** जो व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिये उत्कृष्ठ भाव से उद्धत होता है | पहला पाँव उठाते ही उसका कार्य हो गया, ऐसा भगवान फरमाते है, क्योंकि व्यक्ति ने मन से वह कार्य करने की प्रतिज्ञा कर लेता है, व्यक्ति चल कर सन्त दर्शन हेतु जाता है, तो उसे वहाँ पहुँचने में थोडा समय लगता है, किन्तु मन विचारते ही एक समय के अन्दर, गतव्य स्थान पर पहुँच जाता है, और अपना कार्य सिद्ध लेता है |

एक बार एक गाँव में, किसी आचार्य भगवंत का प्रवेश होता है, गाँव में रहने वाला एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, मन में अहोभाव लाकर, गुरु भगवन्तो के पधारने का सुनकर, अति प्रफुल्लित होता है | और सन्त दर्शन हेतु पधारने वाले, महेमानो का साधर्मिक भक्ति का लाभ, लेने का मन बनाता है, इस हेतु उसने आचार्य भगवंत से विनंती की, एवं संघ के पदाधिकारीओ से भी अनुमति ली | अनुमति मिलने पर सुबह पांच बजे से ही, वह व्यक्ति तैयारी में लग गया था, उसके परिवार वाले भी इस काम में मन से जुड़ जाते है | नवकारसी से लेकर स्वामी वात्सल्य हेतु, सभी तैयारियाँ कर ली गयी, रसोइयाँ महाराज को बुलाकर, सारे व्यंजन आदि बना लिये | वह अच्छे मन से, सन्त दर्शन हेतु पधारने वाले व्यक्तिओ की, सेवा करना चाहता था |

अभी सन्त का पदार्पण हो चूका था, साथ में आये व्यक्तिओ की, नवकारसी की उचित व्यवस्था की गयी थी, आगन्तुक सभी मेहमानों को, उसने प्रेम से नवकारसी करवाई, मेहमान भी इस व्यक्ति की सेवा पर बहुत प्रसन्न थे | निश्चित समय पर प्रवचन शुरू होता है, बहार गाँव से सन्त दर्शन एवं प्रवचन श्रवण हेतु कई व्यक्तिओं का पदार्पण हुआ | प्रवचन के पश्चात् ११ बजे से स्वामी वात्सल्य का प्रोग्राम शुरू हुआ |

सभी महेमानो को मन के अहो भाव से, उस व्यक्ति ने खाना खिलाया, महेमान उनकी सेवा से संतुष्ट थे। अभी कार्य पूरा नहीं हुआ था | दो-चार, दो-चार लोग क्रमशः आते रहे, अब तीन बजे का समय हो चूका था, साधर्मिक भक्ति कराने वाला व्यक्ति, एवं उसके परिवार जन, सुबह पांच बजे से तैयारी में लगे थे, अब उन्हें थकान महसुस हो रही थी, सारा भोजन का कार्य अब समेट लिया था |

इतने में वहाँ चार व्यक्ति सन्त दर्शन हेतु पधारते है, उन्होंने भोजन करने की भावना दर्शायी, किन्तु साधर्मिक भक्ति कराने वाला व्यक्ति, अब टूट चूका था | और सन्त के सामने कहने लगा - मै पांच बजे से आपके पधारे हुये, महेमानो की व्यवस्था कर रहा हूँ, और तीन बजे मैंने अपना सारा कार्य समेट लिया है, अब इन चार महेमानो की व्यवस्था में नहीं कर पाउँगा | अगर इन्हें भोजन करना ही था, तो इन व्यक्तियों को समय पर आना था, आचार्य भगवंत कहने लगे - तूने साधर्मिक भक्ति हेतु, सुबह से जो मेहनत करी, वह निष्फल जा रही है | देव लोक से चलकर ये चारों देवता मनुष्य का रूप लेकर, तुम्हारी परीक्षा करने आये है, इसमें एक व्यक्ति जिसने तीर्थंकर नाम कर्म गौत्र का बन्ध कर लिया है | दूसरा व्यक्ति सर्वार्थ सिद्ध विमान का महेमान है | तीसरा व्यक्ति एका-भवतारी है | एवं चौथा व्यक्ति जिसने समकित प्राप्त कर लिया है, इसके भव-भ्रमण निश्चित हो गये है | एवं आगे चल कर यह आत्मा बारहवें देव लोक में जाने वाली है | इस तरह इन चारों व्यक्तिओं का अपमान कर, तुमने सारा किया कराया समाप्त कर दिया | देव लोक में तेरी साधर्मिक भक्ति की प्रशंसा हो रही थी, और ये चारो देव, देव लोक से चल कर, मनुष्य का रूप लेकर, तेरी परीक्षा करने आये थे |

कहने का अर्थ यह है की, खाना खिलाने के पहले, खाना खिलाने के समय, और खाना खिलाने के बाद, साधर्मिक भक्ति कराने वाले व्यक्ति को, अपने भावो में अभिवृद्धि लाना है, अनुकूलता, प्रतिकूलता आने पर, विचलित नहीं होकर, अपने लक्ष्य तक पहुँचना है | आईये हम सब उत्कृष्ठ भाव से साधर्मिक भक्ति का लाभ ले, और कर्म निर्जरा करते हुये, अनन्य पुण्य का बन्ध करें, और इस पुण्य के उदय से, हमारी आत्मा को कर्म निर्जरा के सारे साधन मिल जायेंगे | एक दिन हमारी आत्मा सिद्ध गति को प्राप्त कर लेगी | इस तरह साधर्मिक भक्ति कर, हम भक्त से भगवान बन सकते है |

जीवन के पाँच पड़ाव- जन्म, बाल्यावस्था, युवान, बुढ़ापा और मृत्यु,
आज पाँच पढाव माने है ! पैसा, पद, प्रतिष्ठा, पुत्र, पत्नी |
किन्तु परोपकार के बिना सब व्यर्थ है,
परोपकार से इन पाँचों का महत्व बढ़ जाता है ||

जीवन एक गणित है, जिसमे अच्छाईओं को जोड़ो,
बुराईओं को घटाओं, दोस्तों का गुणा करो और दुश्मनों का भाग दो |

अपनों के लिये सब करते है, ओरों के लिये कुछ करना है,
मानव भव यह पाया है, बस पुण्य से झोली भरना है |

अनोखीलाल आर. धोका (जैन) - जे.जे.सी. - अंकलेश्वर